अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) शंख है-
(क) एकेन्द्रिय (ख) द्वीन्द्रिय
(ग) त्रीन्द्रिय (घ) चतुरिन्द्रिय (ख)

(ii) असालिया की आयु होती है-
(क) मुहूर्त (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) एक करोड़ पूर्व (घ) तीन पल्योपम (ख)

(iii) पवनकुमार देव किस जाति के हैं-
(क) वाणव्यन्तर (ख) परमाधामी
(ग) भवनपति (घ) त्रिजृम्भक (ग)

(iv) स्पर्श के कुल भेद होते हैं-
(क) 46 (ख) 100
(ग) 184 (घ) 30 (ग)

(v) पुण्य कर्म भोगने की प्रकृतियाँ हैं-
(क) 42 (ख) 82
(ग) 182 (घ) 20 (क)

(vi) सनत्कुमार चक्रवर्ती ने भावना भाई-
(क) लोक (ख) बोधि दुर्लभ
(ग) आस्रव (घ) अशुचि (घ)

(vii) सिद्ध जीव अभवी जीवों से हैं-
(क) अनन्तवें भाग (ख) अनन्त गुणे
(ग) संख्यात गुणे (घ) असंख्यात गुणे (ख)

(viii) एक सिद्ध की अपेक्षा सिद्ध जीव है-
(क) सादि सान्त (ख) सादि अनन्त
(ग) अनादि सान्त (घ) अनादि अनन्त (ख)

(ix) राग-द्वेष पूर्वक वस्तुओं को देखने से लगने वाली क्रिया है-
(क) पाओसिया (ख) दिट्ठिया
(ग) पेज्जवत्तिया (घ) दोसवत्तिया (ख)

(x) चुगली करना कहलाता है-
(क) कलह (ख) अभ्याख्यान
(ग) परपरिवाद (घ) पैशुन्य (घ)

(xi) सिद्धों के भेद में धन्ना जी का उदाहरण जिस भेद में हैं-
(क) तीर्थंकर सिद्ध (ख) अतीर्थंकर सिद्ध
(ग) स्वयं बुद्धि सिद्ध (घ) अन्यलिंग सिद्ध (ख)

(xii) श्वासोच्छ्वास का थोकड़ा प्रज्ञापना सूत्र के पद में है-
(क) पाँचवें (ख) छठे
(ग) सातवें (घ) आठवें (ग)

(xiii) पाँचवें देवलोक के देव जघन्य पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) 2 (ख) 7
(ग) 10 (घ) 14 (ख)

(xiv) श्रमण-निर्ग्रन्थ के सुख का थोकड़ा भगवती सूत्र के शतक में है-
(क) 14 वें (ख) 15 वें
(ग) 16 वें (घ) 9 वें (क)

(xv) कितनी दीक्षापर्याय वाले श्रमण का सुख वाणव्यन्तर देवों से अधिक होता है-
(क) 1 मास (ख) 2 मास
(ग) 3 मास (घ) 4 मास (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) जीवों का भवसिद्धिपना परिणाम से है। (नहीं)

(ii) अव्यवहार राशि में भवी-अभवी दोनों तरह के जीव हैं। (नहीं)

(iii) जो व्यवहार राशि में आ जाते हैं, वे अवश्य ही मोक्ष में जाते हैं। (हाँ)

(iv) चना, परमल आदि का आहार अन्ताहार है। (हाँ)

(v) मकान देने से शयन पुण्य होता है। (नहीं)

(vi) 'अलाभ' परीषह का एक भेद है। (हाँ)

(vii) हिंसाकारी कार्यों का चिन्तन करना आर्तध्यान है। (नहीं)

(viii) व्युत्सर्ग का अर्थ त्याग है। (हाँ)

(ix) आलोचना नहीं करने से परलोक का भय बताने वाला अपायदर्शी होता है। (हाँ)

(x) दूसरे देवलोक के ऊपर ही देवियों का जन्म होता है। (नहीं)

(xi) लोक शाश्वत एवं अनित्य है। (नहीं)

(xii) विशेषणवती ग्रन्थ आचार्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण द्वारा रचित है। (हाँ)

(xiii) लोक असंख्यात कोड़ाकोडी योजन का लम्बा चौड़ा विस्तार वाला है। (हाँ)

(xiv) 12 मास की दीक्षापर्याय वाले का सुख संसार में सर्वाधिक है। (नहीं)

(xv) भगवती सूत्रानुसार तेजो लेश्या प्रशस्त तो है, किन्तु सुख का कारण नहीं है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	पुण्य प्रकृति	(क) पडिमट्ठाई	आतप
(ii)	कायक्लेश तप	(ख) सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती	पडिमट्ठाई
(iii)	स्वाध्याय	(ग) प्रमाद	अनुप्रेक्षा
(iv)	धर्मध्यान	(घ) आतप	विपाक विचय
(v)	परीषह	(च) सम्यक्त्व	दर्शन
(vi)	क्रिया	(छ) त्याग	साहत्थिया
(vii)	आस्रव	(ज) अनुप्रेक्षा	प्रमाद
(viii)	रूचि	(झ) विपरिणाम	सूत्र
(ix)	पाप प्रकृति	(य) कर्म	उपघात
(x)	प्रायश्चित्त तप	(र) सूत्र	व्युत्सर्ग
(xi)	शुक्ल ध्यान	(ल) साहत्थिया	सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती
(xii)	संवर	(व) उपघात	सम्यक्त्व
(xiii)	व्युत्सर्ग	(क्ष) व्युत्सर्ग	कर्म
(xiv)	अनुप्रेक्षा	(त्र) दर्शन	विपरिणाम
(xv)	यति धर्म	(ज्ञ) विपाक विचय	त्याग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं ऐसा पक्षी हूँ, जिसके पंख हमैशा खुले रहते हैं। — वितत पक्षी

(ii) मैं रुधिर में उत्पन्न होने वाला मनुष्य हूँ। — सम्मूर्च्छिम मनुष्य

(iii) मैं चीर-फाड़ से लगने वाली क्रिया हूँ। — वेयारणिया

(iv) मैं अग्नि संस्कार रहित होने वाला यावत्कथिक अनशन हूँ। — अनिहारी

(v) मुझे वृत्ति-संक्षेप भी कहते हैं। — भिक्षाचर्या

(vi) मैं गुरु के समीप रहने से होना वाला विनय हूँ। — लोकोपचार विनय

(vii) मेरा लक्षण टप-टप आँसू गिराना है। — आर्त्तध्यान

(viii) भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 2 में मेरे पूछे प्रश्नों के उत्तर हैं। — जयन्ती बाई/श्रमणोपासिका

(ix) मुझमें से प्रत्येक समय असंख्यात जीव काय परीत में आते हैं। — निगोद/साधारण वनस्पति

(x) हम लोहार की धमण की तरह निरन्तर श्वास लेते हैं। — नैरिये/नारकी

(xi) हम सिर्फ स्पर्शनेन्द्रिय से ही श्वास लेते और छोड़ते हैं। — एकेन्द्रिय/पाँच स्थावर

(xii) मेरा श्वासोच्छ्वास जघन्य 29 पक्ष व उत्कृष्ट 30 पक्ष है। — आठवीं ग्रैवेयक के देव

(xiii) हम अजघन्य-अनुत्कृष्ट 33 पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। — सर्वार्थ सिद्ध विमान के देव

(xiv) मेरी जितनी सागरोपम की स्थिति होती है, उतने पक्ष का श्वासोच्छ्वास होता है। — देवों में

(xv) 11 मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण का सुख मुझसे बढ़कर है। — नव ग्रैवेयक

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) प्रथम देवलोक के देवों का जघन्य-उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास काल लिखिए।
प्रथम देवलोक के देवों का श्वासोच्छ्वास जघन्य- पृथक्त्व मुहूर्त और उत्कृष्ट दो पक्ष में

(ii) श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुलना किनसे की गई है ?
देवताओं के सुख से

(iii) एकेन्द्रिय जीवों का श्वासोच्छ्वास काल लिखिए।
विमात्रा अर्थात् अनियत समय में

(iv) सुखी होने पर जीवों की श्वासोच्छ्वास क्रिया किस प्रकार चलती है ?
उत्तरोत्तर देरी से चलती है अर्थात् उसका श्वासोच्छ्वास और विरहकाल अधिक-अधिक होता है।

(v) भवनपति देवों का जघन्य-उत्कृष्ट श्वासोच्छ्वास काल लिखिए।
भवनपति देवों में असुरकुमार देव जघन्य 7 स्तोक में और उत्कृष्ट एक पक्ष से अधिक समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। शेष नव निकाय के देव और व्यंतर जाति के देव जघन्य 7 स्तोक और उत्कृष्ट पृथक्त्व मुहूर्त में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

(vi) भव भ्रमण का थोकड़ा किन जीवों कीय प्रधानता से बतलाया है ?
व्यवहार राशि के जीवों की प्रधानता से बतलाया है।

(vii) जीव के भारी होने का क्या कारण है ?
अठारह पापों के आचरण से जीव भारी होता है।

(viii) अव्यवहार राशि में कितने जीव हैं, जिन्हें वहाँ से निकलने का अवसर ही नहीं मिलता है ?
अनन्तानन्त भवी जीव हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) अनवस्थाप्पार्ह प्रायश्चित्त को समझाइए।
अनवस्थाप्पार्ह- महाव्रतों से अलग कर दोष शुद्धि हेतु विशेष तप कराना, शुद्धि हो जाने पर पुनः यय

दीक्षा देना।

(ii) अरूपी अजीव के दस भेद लिखिए।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय, इन तीनों के 3-3 भेद, स्कन्ध, देश और प्रदेश, ये 9 तथा दसवाँ भेद-काल।

(iii) कौनसे जीव सोते हुए अच्छे हैं ?

जो जीव अधर्मी है, अधर्म का काम करते हैं, अधर्म का उपदेश देते हैं, अधर्म में आनन्द मानते हैं, यावत् अधर्म से आजीविका करते हैं, वे जीव सोते हुए अच्छे हैं। सोते रहने पर वे सभी प्राण,भूत,जीव और सत्त्व को दुःख नहीं दे पाते, यावत् परितापना नहीं उपजाते, अपनी तथा दूसरों की आत्मा को अधर्म में नहीं जोड़ते। इस कारण अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे हैं।

(iv) श्रोत्रेन्द्रिय के वश हुआ जीव किस प्रकार की स्थिति एवं रस का बंध करता है ?

थोड़ै काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मंद रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है।

(v) व्यवहार राशि में भव्य जीव सदैव बराबर रहने का क्या कारण है ?

जितने जीव मोक्ष में जाते हैं, उतने ही भव्य जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं, इस कारण से व्यवहार राशि में भव्य जीव हमेशा बराबर ही रहते हैं।

(vi) लोक भवसिद्धिक जीवों से कभी खाली नहीं होता, इसकी पुष्टि में दिये जाने वाले आकाश की श्रेणियों के दृष्टान्त को लिखिए।

जैसे-आकाश की श्रेणी अनादि अनन्त है। उसमें से एक-एक परमाणु खण्ड जितना प्रदेश, एक-एक समय में निकाले। इस प्रकार निकालते-निकालते अनन्ती अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी पूरी हो जाय, तो भी यह आकाश श्रेणी खाली नहीं होती।

(vii) संसार में इस जीव ने सब जगह जन्म-मरण किया है, इसकी पुष्टि के लिए कोई तीन कारण लिखिए।

नोटः- इनमें से कोई तीन कारण मान्य-

1. लोक शाश्वत है। (विनाशी होने पर संसार में सभी जगहों पर जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती।)
2. लोक अनादि है। (लोक को सादि-आदि सहित मानने पर भी सभी जगह जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती।)
3. जीव नित्य है। (यदि जीव अनित्य हो तो भी सभी जगहों पर जन्म-मरण की बात घटित नहीं हो सकती।)
4. कर्मों की बहुलता है। (यदि कर्मों की अल्पता हो तो वे सब जगह जन्म-मरण नहीं हो सकता।)
5. जन्म-मरण की बहुलता है।(यदि जन्म-मरण की अल्पता हो तो भी सब जगह जन्म-मरण नहीं हो सकता।)

(viii) श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता का थोकड़ा किस अपेक्षा से समझना चाहिए ?

मध्यम दर्जे के निरतिचार संयम पर्याय का पालन करने वाले श्रमण निर्ग्रन्थों की अपेक्षा से समझना चाहिए क्योंकि अनेक साधु देशोन करोड़ पूर्व तक संयम पर्याय का पालन करके आराधक होने पर भी प्रथम देवलोक में ही जाते हैं, जबकि भरत महाराजा, मरुदेवी माता आदि ने तो अन्तर्मुहूर्त में ही कैवल्य पर्याय को प्राप्त कर लिया। गजसुकुमाल मुनि आदि ने एक दिन के संयम पर्याय में ही कैवल्य पर्याय को प्राप्त कर शाश्वत सिद्धि रूप सुख को प्राप्त कर लिया था।